भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केंद्रीय कमेटी

प्रेस वक्तव्य

दिनांक–12 मार्च, 2018

साम्राज्यवादी ज़ंजीरों को तोड़ दें!
ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवाद को दफना दें!

धरती मां की औपनिवेशिक ज़ंजीरों को तोड़ने के लिए अंग्रेजी साम्राज्यवादियों के खिलाफ हिम्मत के साथ संघर्ष करते हुए नव जवानी में फांसी के फंदे से झूलकर अपनी अनमोल जानें कुरबान करने वाले वीर योद्धा कॉमरेड्स भगत सिंह, राजगुरु एवं सुकदेव के शहादत दिवस–23 मार्च को साम्राज्यवादी–विरोधी दिवस के रूप में मनाने तथा उनके अधूरे आशयों की पूर्ति के लिए आखिरी दम तक अविराम संघर्ष करने भारत की कम्युकनिस्ट पार्टी (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी जनता, विशेषकर नव जवानों, जनवादी–प्रगतिशील व देशभक्त ताकतों का आह्वान करती है.

यह सर्वविदित है कि 23 मार्च का दिन भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में खूनी अक्षरों से अंकित हुआ है. कॉमरेड भगत सिंह और उनके साथी देश के युवाओं के सामने कल, आज और कल आदर्शवान थे, हैं और बने रहेंगे. पराया शासन और शोषण के खिलाफ 'साम्राज्यवाद मुर्दाबाद', 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारे बुलंद करते हुए असमान साहस के साथ संघर्ष करने वाले क्रांतिकारी थे. वे कभी नहीं चाहते थे कि गोरों की जगह कालों का शोषण स्थापित हो. कॉमरेड भगत सिंह ने कहा था–' एक आदमी द्वारा दूसरे का शोषण न हो, ऐसी समतामूलक समाज व्यवस्था को स्थापित करने के लिए हम क्रांति का आह्वान कर रहे हैं'. उनके बलिदानों का स्मरण करने का मतलब है, शोषणविहीन समाज व्यवस्था के लिए संघर्ष करना.

कॉमरेड भगत सिंह नास्तिक थे. मजहब या जाति के नाम पर जनता के बीच में विभाजन पैदा करने का उन्होंने विरोध किया था. चूंकि वे समाजवादी समझदारी से लैस क्रांतिकारी थे, इसलिए वैज्ञानिक नजरिए के साथ संघर्ष के संदेश को उन्होंने जनता तक पहुंचाया. उनके सपनों को साकार करने के लिए संघर्ष करने का अर्थ है, ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद को दफनाना.

आज हमारा देश अभूतपूर्व ढंग से साम्राज्यवादी शोषण का शिकार है. वर्तमान शोषक–शासक वर्ग साम्राज्यवादपरस्त उदारीकरण, निजीकरण एवं भूमंडलीकरण की नीतियों पर अमल करते हुए हमारे देश की अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों की नीलामी के लिए बोली लगाते हुए उसे विनाशकारी अर्थव्यवस्था में तब्दील कर रहे हैं. इसी का दूसरा और आज का नाम है, 'मेक इन इंडिया'. केंद्र की भाजपानीत सरकार कई साम्राज्यवादी, पूंजीवादी देशों के साथ कइयों वाणिज्यिक व व्यापारिक समझौते करके देश को औपनिवेशिक स्थिति से भी बदतर बनाया जा रहा है. इन शोषणमूलक व देशद्रोही नीतियों का मुकाबला किए बगैर हमारे देश को असली आजादी हासिल नहीं होगी. इस दिशा में भगत सिंह के दर्शाए मार्ग पर चलते हुए हथियारबंद लड़ाई में कूदने हमारी पार्टी देश के छात्र एवं युवा वर्ग का आह्वान करती है.

आज की युवा पीढ़ी को इस सच्चाई से अवगत होने की आवश्यकता है कि ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद साम्राज्यवाद के साथ गंठजोड़ करके शासन व्यवस्था को संचालित कर रहा है. वर्तमान में केंद्र में सत्तारूढ़ कट्टरपंथी हिंदू धर्मोन्मादी शासक गुट देश को प्रतिगामी दिशा में व प्रतिक्रियावाद की ओर ढकेल रहा है. देश के तमाम सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों को ब्राह्मणीय विचारों से लैस करने व देश की समूची जनता को जबरन हिंदू बनाने की साजिश पर अमल कर रहा है. घोर फासीवादी नीतियों पर अमल करते हुए उसकी जनविरोधी, देशविरोधी व धर्मोन्मादी नीतियों का विरोध करने वाले पत्रकारों, हेतुवादियों, देशभक्तों, जनवादी–प्रगतिशील–वामपंथी ताकतों पर हमले कर रहा है, उनकी हत्या कर रहा है. जन आकांक्षाओं को साकार करने के लिए लड़ने वाले युवाओं पर आतंकवादी का ठप्पा लगा रहा है. फिलहाल 21 राज्यों में सत्ता की लगाम हथिया चुके हिंदुत्व फासीवादी शासक गुट समूचे देश पर भगवा झंडा लहराने उतावला है. मानव जाति की मुक्ति के लिए साहसिक संघर्ष करने वाले कॉमरेड लेनिन, मानवताविरोधी ब्राह्मणवाद का खिलाफत करने वाले रामस्वामी पेरियार की मूर्तियों को हिंदू धर्मोन्मादी ताकतें तोड़ रही हैं. हिंदू धर्मांधता को हराए बगैर, ब्राह्मण धर्म को दफनाए बगैर भगत सिंह के आशयों को हासिल नहीं कर सकते हैं.

आज देश के सभी तबकों की जनता संघर्ष की राह पर अग्रसर है. अंतहीन समस्याओं से तंग आकर किसान आत्महत्याओं की जगह जुझारु आंदोलनों का रास्ता अपना रहे हैं. नासिक से मुंबई की लंबी यात्रा उसी सिलसिले का हिस्सा है. साम्राज्यवाद–पूंजीपतिपरस्त व मजदूरविरोधी नीतियों के खिलाफ मजदूर हड़ताल की राह पर आगे बढ़ रहे हैं. छात्र अपनी जायज समस्याओं के हल के लिए संघर्षरत हैं. शिक्षक, कर्मचारी सड़कों पर उतरने मजबूर हैं. ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी ताकतों के खिलाफ दलित, आदिवासी, धर्मिक अल्पसंख्यक, महिलाएं एवं तमाम अन्य उत्पीड़ित तबकें आंदोलित हैं. इन सबके साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ने हमारी पार्टी युवा वर्ग का आह्वान करती है.

हमारी पार्टी के नेतृत्व में आज देश में क्रांतिकारी आंदोलन जारी है. उत्पीड़ित–शोषित जनता असामान्य बलिदान देते हुए लड़ रही है. हमारे आंदोलन के सफाए के लिए क्रांतिकारी संघर्ष के इलाकों में तैनात लाखों सशस्त्र बलों का हमारी पार्टी के नेतृत्व में

पीएलजीए व जनता छापामार युद्धतंत्र के जरिए अत्यंत साहसिक ढंग से मुकाबला कर रही हैं. 'क्रांतिकारी ही सच्चे देशभक्त हैं', यह बात देश के इतिहास के पन्नों में विगत पांच दशकों से अंकित हो रहा है. ब्राह्मणीय हिंदुत्व के खिलाफ जारी देशव्यापी संघर्ष एवं जनता की विरोध कार्रवाइयों में क्रांतिकारी आंदोलन कंधे से कंधा मिलाकर चल रहा है. भगत सिंह के सच्चे वारिस के रूप में माओवादी आंदोलन देश में ही एक नमूना बनकर अग्रगति पर है. इसका उन्मूलन करने हिंदुत्व फासीवादी शासक गुट नई प्रतिक्रांतिकारी रणनीतिक योजना–समाधान पर अमल कर रहा है. ऐसे में देश की युवा जो आबादी का 65 प्रतिशत है, का हमारी पार्टी आह्वान करती है कि वह क्रांतिकारी आंदोलन के पक्ष में खड़ा होकर भगत सिंह के अधूरे आशयों को पूरा करने आगे बढ़ें.

- 23 मार्च को साम्राज्यवाद के खिलाफ सभा–सम्मेलनों व रैलियों का आयोजन करें!
- साम्राज्यवादी शोषण के खिलाफ जनता को जुझारु कार्रवाइयों में गोलबंद करें!

(अभय)
प्रवक्ता
केंद्रीय कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)